JSUNIL TUTORIAL
ACBSE Coaching for Mathematics and Science

9662RZY

संकलित परीक्षा-II (2014-2015)

CPS Samastipur

हिन्दी 'अ'

कक्षा - X

निर्धारित समय : 3 घण्टे

अधिकतम अंक : 90

निर्देश :

(1) इस प्रश्न-पत्र के **चार खंड** हैं - **क, ख, ग** और **घ**।

(2) चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना **अनिवार्य** है।

(3) यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

QUESTION PAPER @2015 for SA2
JSUNIL TUTORIAL
www.jsuniltutorial.weebly.com/

खंड - क
(अपठित बोध)

1 **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए।** 5

किसी भी देश या समाज की उन्नति का आधार स्तम्भ वहाँ के निवासियों की सच्चरित्रता , परिश्रमशीलता तथा उनके नैतिक मूल्य होते हैं। हमारे देश ने ही विश्व को मानवता , नैतिकता व सदाचार का पाठ पढ़ाया था। पर आज पूरे देश में चारों ओर स्वार्थ , लाभ व बेईमानी का बोलबाला है। इसी कारण आज भ्रष्टाचार रूपी रोग सभी सामाजिक , राजनैतिक , धार्मिक क्षेत्रों में एक असाध्य रोग की भाँति अपनी जड़ें जमा चुका है। मर्यादा से हटकर स्वार्थपूर्ण दूषित आचरण ही भ्रष्टाचार कहलाता है। स्वार्थ लिप्सा भ्रष्टाचार की जननी और भौतिक ऐश्वर्य इसका जनक है। आज देश में भ्रष्टाचार का ही बोलबाला है। कोई भी विभाग इससे अछूता नहीं रहा है। भाई - भतीजावाद, मिलावट, अनुचित ढंग से मुनाफाखोरी करना , चोरबाज़ारी , सरकारी साधनों का अनुचित प्रयोग भ्रष्टाचार के प्रमुख कारण हैं। इसके कारण आज हमारे समाज का पतन होता जा रहा है। इसकी जड़ें हमारे देश को खोखला करती जा रही हैं। कठोर कानून नियन्त्रण एवं आत्मानुशासन द्वारा ही इस समस्या का समाधान किया जा सकता है।

(क) किसी भी देश की उन्नति का आधार क्या होता है?

(i) निवासियों की चरित्रहीनता।

(ii) नैतिक अवमूल्यन।

(iii) परिश्रमशीलता का अभाव।

(iv) निवासियों की परिश्रमशीलता।

(ख) आज पूरे देश में किसका बोलबाला है?

(i) नैतिकता का (ii) आत्मानुशासन का

(iii) स्वार्थ , लाभ व बेईमानी का (iv) सदाचार का

(ग) भ्रष्टाचार को लेखक ने क्या कहा है -

(i) असाध्य रोग (ii) साध्य रोग

(iii) भ्रष्ट आचरण (iv) चिन्ताजनक विचार

(घ) भ्रष्टाचार के माता-पिता कौन हैं?

(i) भाई-भतीजावाद।

(ii) स्वार्थ लिप्सा-भौतिक ऐश्वर्य।

(iii) राजनैतिक-धार्मिक क्षेत्र।

(iv) मुनाफाखोरी-चोरबाज़ारी।

QUESTION PAPER @2015 for SA2
JSUNIL TUTORIAL
www.jsuniltutorial.weebly.com/

(ङ) भ्रष्टाचार की समस्या का समाधान किया जा सकता है -

(i) शिक्षा के प्रसार से (ii) नैतिक शिक्षा से

(iii) कठोर कानून व आत्मानुशासन से (iv) सच्चरित्रता से

2 **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए।** 5

गोविन्दवल्लभ पंत को वर्तमान उत्तर प्रदेश का पिता कहा जा सकता है । सन् 1946 में जब कांग्रेस ने चुनावों में भाग लेने का निश्चय किया तो पंत बरेली से विधान सभा के लिए चुने गए थे । वे सर्वसम्मति से चुने गए नेता थे । समय कठिन था । सांप्रदायिकता , बेरोजगारी और कालेबाजार का बोलबाला था । पंडित पंत ने दृढ़ता से इन समस्याओं का सामना किया । उचित मूल्य की दुकानें खोली गईं और भ्रष्टाचार को रोकने के लिए एक अलग विभाग खोला गया। कानून और व्यवस्था की समस्या से भी निपटा गया। पंत ने ही प्रदेश के युनाइटेड प्रॉविन्स नाम को बदलकर नया नाम उत्तर प्रदेश दिया । जब उनका कार्यकाल आरंभ हुआ तो ढेर सारी समस्याओं का समाधान करीब - करीब असंभव-सा ही लगता था । विभाजन के कारण सांप्रदायिक दंगों ने प्रचंड रूप ले लिया था । पंत ने दंगाग्रस्त स्थानों का अनथक रूप से दौरा किया । उन्होंने लोगों से शांत रहने की अपील की तथा स्थिति को नियंत्रण में लाने में सफल हुए । पंत का प्रयास था कि जनसाधारण की दशा में सुधार हो । उन्होंने जमींदारी प्रथा को , जिसने किसानों का शोषण किया था , सन् 1952 में समाप्त करके अपना सपना साकार किया ।

(क) गोविन्दवल्लभ पंत को उत्तर प्रदेश का पिता क्यों कहा गया है?

(i) वे सबसे अधिक उम्र के व्यक्ति थे

(ii) उत्तरप्रदेश से ही उन्हें विधानसभा में जाने का अवसर मिला था

(iii) उन्होंने इसे उत्तरप्रदेश नाम देकर विकास के पथ पर अग्रसर किया

(iv) उन्होंने कठिन समय में चुनाव लड़ा।

(ख) आरंभ में पंत को किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ा ?

(i) महँगाई और अशिक्षा

(ii) गरीबी और अशिक्षा

(iii) सांप्रदायिकता , बेरोजगारी व कालाबाजारी

(iv) बेरोजगारी और जमींदारी

(ग) उत्तरप्रदेश का पुराना नाम क्या था ?

(i) युनाइटेड स्टेट (ii) युनाइटेड प्रॉविन्स
(iii) अवध प्रांत (iv) संयुक्त प्रांत

(घ) सांप्रदायिक दंगों के भड़कने का क्या कारण था ?
(i) दो विभिन्न धर्म के लोगों की कट्टरता
(ii) देश में फैली सांप्रदायिकता
(iii) देश का विभाजन
(iv) नेताओं की कुटिलता

QUESTION PAPER @2015 for SA2
JSUNIL TUTORIAL
www.jsuniltutorial.weebly.com/

(ङ) गोविन्दवल्लभ पंत का सपना क्या था ?
(i) आम आदमी की दशा में सुधार
(ii) गाँवों का विकास
(iii) जमींदारी की समाप्ति
(iv) किसानों को फसल का उचित लाभ

3 **निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गये प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर सही उत्तर दीजिए-** 5

मेरा मस्तक अपनी चरण धूलि तक झुका दे।
प्रभु ! मेरे समस्त अहंकार को आँखों के पानी में डुबा दे।
अपने झूठे महत्व की रक्षा करते हुए,
मैं केवल अपनी लघुता दिखाता हूँ।
अपनी परिक्रमा करते करते ,
मैं प्रतिक्षण क्षीण - जर्जर होता जा रहा हूँ।
मैं अपने सांसारिक कार्यों में अपने को व्यक्त नहीं कर पाता
प्रभु ! मेरे जीवन कार्यों में तु अपनी ही इच्छा पूरी कर
मैं तुझसे चरम शान्ति की भीख माँगने आया हूँ,
मेरा जीवन उज्ज्वल कांति से भर दे!
मेरे हृदय -कमल की ओट में तू खड़ा रह।
प्रभु! मेरे अहंकार को आँखों के पानी में डुबा दे।

(क) कवि ईश्वर से प्रार्थना कर रहा है -
(i) अहंकार को समाप्त करने की।
(ii) अनुग्रह करने की।
(iii) चरण - धूलि देने की।
(iv) उसका मस्तक अपने चरणों में झुकने की।

(ख) झूठे महत्व की रक्षा करना होता है एक मात्र -
(i) अपनी लघुता दिखाना।
(ii) झूठा अहंकार करना।
(iii) अपने आप को धोखा देना।
(iv) दूसरे की नज़रों में उठने की चेष्टा।

(ग) अपनी परिक्रमा करने का अर्थ है -

(i) मन का भटकना।
(ii) आत्म - प्रवंचना।
(iii) आत्म संतुष्टि।
(iv) स्वार्थ के विषय में सोचना।

(घ) कवि भगवान से प्रार्थना करते हैं कि -

(i) वे सांसारिक काम ठीक से पूरा कर पाएँ।
(ii) उनके कार्यों द्वारा ईश्वर की इच्छा पूरी हो।
(iii) जीवन में सफलता मिले।
(iv) जीवन में पूर्णता प्राप्त हो।

QUESTION PAPER @2015 for SA2
JSUNIL TUTORIAL
www.jsuniltutorial.weebly.com/

(ङ) कवि ईश्वर से याचना कर रहे हैं -

(i) अपने अहंकार को समाप्त करने की।
(ii) अपना जीवन उज्ज्वल करने की।
(iii) अपने हृदय में उसके निवास की।
(iv) चरम शान्ति की प्राप्ति की।

4 निम्नलिखित काव्यांश को पढ़िए तथा उनके नीचे दिए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्पों से चुनकर लिखिए - 5

चौपाल के चबूतरे पर
पहले एक पेड़ था
एक हुक्का था
दसियों लोग थे
गप्पें हांकते थे
'हो-हो' करके हँसते थे
पेड़ जीवित था ।
कबूतर भी
उनकी हाँ में हाँ मिलाकर
गुटरगूं करते थे
दसियों का चेहरा एक था।
पेड़ की डालें कट गईं
कबूतर उड़ गए
दस हुक्के हो गए
आवाजें सिमटकर चिलम की तरह बुझ गईं।
अब कोई चेहरा
स्पष्ट नजर नहीं आता
पेड़ मर गया
सब कुछ बिखर गया

कबूतर कहाँ गए,
क्या पता?

(क) इस कविता में महत्व दर्शाया गया है -
(i) पेड़ का। (ii) हुक्के का।
(iii) कबूतर का। (iv) चौपाल पर खड़े पेड़ का।

(ख) 'दसियों' का चेहरा एक था पंक्ति का आशय है -
(i) वे सभी एक शक्ल के थे। (ii) वे सभी सगे भाई थे।
(iii) वे आपस में मिलजुलकर रहते थे। (iv) वे दूसरे के संबंधी थे।

(ग) "दस हुक्के हो गए" का अर्थ है ?
(i) सभी ने अपने - अपने हुक्के खरीद लिए।
(ii) उनमें एकता का भाव नहीं रहा।
(iii) सभी भाई एक - एक हुक्का खरीद लाए।
(iv) वे सब अलग - थलग पड़ गए ।

QUESTION PAPER @2015 for SA2
JSUNIL TUTORIAL
www.jsuniltutorial.weebly.com/

(घ) आवाजें सिमटकर चिलम की तरह बुझ गईं - में निहित भाव है -
(i) आपस में हँसी मज़ाक अपनी बात कहना सब बंद हो गया।
(ii) उनमें आपस में लड़ाई रहने लगी।
(iii) वे अपनी समस्याएँ एक-दूसरे को नहीं बताते।
(iv) उन्होंने परस्पर बात करना बंद कर दिया।

(ङ) चौपाल के पेड़ की उपयोगिता है कि उससे
(i) परस्पर प्यार बढ़ता है।
(ii) चौपाल के पेड़ की छाया में परिवार व मौहल्ले के सभी लोग आकर बैठते हैं।
(iii) साथ बैठने से आपस का दुख - दर्द व समस्याएँ हल करने तथा प्यार से रहने का अवसर मिलता है
(iv) सभी एक दूसरे को अपना समझते हैं।

QUESTION PAPER @2015 for SA2
JSUNIL TUTORIAL
www.jsuniltutorial.weebly.com/

खंड - ख
(व्यावहारिक व्याकरण)

5 निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार बदलिए- 3
(i) वे सफलता प्राप्त करते हैं, जो कर्मठ होते हैं। (सरल वाक्य)
(ii) माँ ने मेहमानों को खाना खिलाकर विदा किया। (संयुक्त वाक्य)
(iii) यद्यपि वह गुणों की खान है तथापि उसमें अहंकार नहीं है। (संयुक्त वाक्य)

6 निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए- 4
(i) छात्र गेंद से खेल रहे हैं।(कर्मवाच्य)

(ii) सुधांशु नहीं पढ़ता। (भाववाच्य)

(iii) उनके द्वारा क्या लिखा जाएगा। (कर्तृवाच्य)

(iv) दुश्मनों ने सैनिकों पर गोली चलाई । (कर्मवाच्य)

7 निम्नांकित वाक्यों के रेखांकित पदों का व्याकरणिक परिचय दीजिए- 4

(i) रेखा पत्र लिखती है।

(ii) महेश बहुत बुद्धिमान है।

(iii) वह कक्षा में सो जाती है।

(iv) मेरे दादा जी धीरे-धीरे चलते हैं।

QUESTION PAPER @2015 for SA2
JSUNIL TUTORIAL
www.jsuniltutorial.weebly.com/

8 (क) हास्य रस का स्थायी भाव लिखिए। 4

(ख) विस्मय किस रस का स्थायी भाव है?

(ग) बुंदेले हर बोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी, खूब लड़ी मरदानी वो तो झांसी वाली रानी थी में रस बताइये।

(घ) शृंगार रस की कुछ पंक्तियाँ लिखिये।

खंड - ग

(पाठ्यपुस्तक)

9 **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-(2+2+1)** 5

आज पीछे मुड़कर देखती हूँ तो इतना तो समझ में आता ही है क्या तो उस समय मेरी उम्र थी और क्या मेरा भाषण रहा होगा। यह तो डॉक्टर साहब का स्नेह था जो उनके मुँह से प्रशंसा बनकर बह रहा था या यह भी हो सकता है कि आज से पचास साल पहले अजमेर जैसे शहर में चारों ओर से उमड़ती भीड़ के बीच एक लड़की का बिना किसी संकोच और झिझक के यों धुआँधार बोलते चले जाना ही इसके मूल में रहा हो। पर पिता जी ! कितनी तरह के अंतर्विरोधों के बीच जीते थे वे ! एक ओर ' विशिष्ट ' बनने और बनाने की प्रबल लालसा तो दूसरी ओर अपनी सामाजिक छवि के प्रति भी उतनी ही सजगता। पर क्या यह संभव है ? क्या पिता जी को इस बात का बिलकुल भी अहसास नहीं था कि इन दोनों का तो रास्ता ही टकराहट का है?

(1) पिता जी की सबसे बड़ी इच्छा क्या थी?

(2) लेखिका के अनुसार कौन सी दो बातों का एक साथ होना संभव नहीं?

(3) लेखिका को आज अपनी सराहना का क्या कारण महसूस हुआ?

निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए :

10(i) लेखिका और अन्य तीन छात्राओं के लिए कॉलेज प्रशासन ने क्या आदेश दिए थे? 'एक कहानी यह भी' के आधार पर लिखिए। 2

10(ii) 'स्त्रीशिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' पाठ में उल्लिखित परित्यक्ता सीता ने रामचन्द्र के विषय में क्या कहा था ? 2

10(iii) अमीरुद्दीन और बड़े भाई शम्सुद्दीन को रागों की जानकारी किससे मिली ? 2

10(iv) न्यूटन को संस्कृत मानव कहने के पीछे कौन से तर्क दिए गए हैं? न्यूटन द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों एवं ज्ञान की कई दूसरी बारीकियों को जानने वाले लोग भी न्यूटन की तरह संस्कृत नहीं कहला सकते क्यों? 'संस्कृति' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए। 2

10(v) आशय स्पष्ट कीजिए मानव की जो योग्यता उससे आत्म-विनाश के साधनों का आविष्कार कराती है। हम उसे उसकी संस्कृति कहें या असंस्कृति। 2

11 **निम्न पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-(2+2+1)** 5

दुविधा - हत साहस है , दिखता है पंथ नहीं,
देह सुखी हो पर मन के दुख का अंत नहीं ।
दुख है न चाँद खिला शरद - रात आने में ,
क्या हुआ जो खिला फूल रस - बसंत जाने पर?
जो न मिला भूल उसे कर तू भविष्य वरण ,
छाया मत छूना
मन , होगा दुख दूना।

QUESTION PAPER @2015 for SA2
JSUNIL TUTORIAL
www.jsuniltutorial.weebly.com/

(1) यहाँ कवि का कौन सा दृष्टिकाण प्रकट हुआ है?
(2) यदि कुछ अप्राप्त रह गया हो तो क्या करना ठीक है?
(3) इस काव्यांश में किस भाषा का प्रयोग है?

निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए :

12(i) लक्ष्मण ने परशुराम के लिए कैसी व्यंग्यवाणी का सहारा लिया था? उसका परिणाम क्या हुआ था? 2

12(ii) 'छाया मत छूना' पाठ में 'छाया' शब्द किस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है? कवि ने उसे छूने से मना क्यों किया है? 2

12(iii) कवि ऋतुराज के अनुसार सुंदरता और कोमलता के गौरव की वस्तुत: सच्चाई क्या है? बताइए। 2

JSUNIL TUTORIAL
www.jsuniltutorial.weebly.com/

12(iv) संगतकार का दबा हुआ सुर उसकी पराजय का प्रतीक नहीं है, क्यों? 2

12(v) संगतकार कविता के संदर्भ में बताइए कि 'अंतरे की जटिल तानों के जंगल' का क्या अभिप्राय है? 2

13 खेदुम के लोगों की नदी , झरनों तथा पहाड़ों के बारे में क्या धारणा है? आप स्वयं इस विषय में क्या अनुभव करते है ? लिखिए। 5

QUESTION PAPER @2015 for SA2
JSUNIL TUTORIAL
www.jsuniltutorial.weebly.com/

खंड - घ

(लेखन)

दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर किसी एक विषय पर 200 - 250 शब्दों में निबंध लिखिए :

14(i) भ्रष्टाचार : 10

- भ्रष्टाचार का अर्थ
- हर क्षेत्र में बोलबाला
- भ्रष्टाचार के कारण और निवारण

14(ii) कल करै सो आज कर :

- सूक्ति का स्पष्टीकरण
- सफलता का मंत्र है समय नियोजन
- टालने वाली प्रवृत्ति घातक

14(iii) सांप्रदायिकता और सामाजिक एकता : 10

- सांप्रदायिकता का अर्थ
- समाज पर दुष्प्रभाव
- सांप्रदायिकता कैसे मिटाएँ?

15 दिल्ली में महिलाओं के साथ छेड़-छाड़ की घटनाओं को रोकने के लिए प्रभावी कदम उठाने हेतु पुलिस आयुक्त को पत्र लिखिए। 5

16 **निम्नलिखित गद्यांश का सार एक तिहाई शब्दों में लिखिए।** 5

भारतीय संस्कृति भावात्मक एकता का आधार है लेकिन कई बार राजनीतिक स्वार्थ, अस्पृश्यता, सांप्रदायिक तनाव, भाषा-भेद क्षेत्रीय मोह तथा जातिवाद आदि संकीर्ण भावनाओं के प्रबल होने पर हमारी भावात्मक एकता हो खतरा पैदा हो जाता है। परिणामस्वरूप अदूरदर्शी, मंदबुद्धि, धर्मान्ध लोग गुमराह होकर अपने छोटे स्वार्थों की पूर्ति के लिए अलग रास्ते की मांग करने लगते हैं। राजनैतिक दलबंदी का सहयोग पाकर ये स्वार्थ अनेक बार भयंकर रूप धारण कर लेते हैं। कुछ समाचार पत्र अपने कर्तव्य से विमुख होकर राजनैतिक स्वार्थों का समर्थन करने लगते हैं। इस तरह संघर्ष का बोलवाला हो जाता है। शत्रु देश भी इसका लाभ उठाकर गुप्त रूप से स्वार्थी तत्वों को पुष्ट करने लगते हैं। राज्यों में अव्यवस्था फैलने से केन्द्र और उनमें संबंध बिगड़ने लगते हैं। कुछ लोग हिंसा का पथ ग्रहण कर इस समस्या को और भी विकट बना देते हैं। सारा देश आंदोलन का अखाड़ा बन जाता है। कुछ देशों की गुप्तचर एजेंसियां धन आदि की सहायता से स्वार्थी तत्वों को प्रोत्साहित करती हैं तथा भड़काती हैं।